

Training on sustainable harvesting/ collection, processing and storage of *Terminalia chebula* (Harra) fruits in Madhya Pradesh

Eight (08) training programmes on sustainable harvesting/ collection and processing of *Terminalia chebula* (Harra) fruits were conducted in Balaghat, Paraswada, Baihar and Birsa ranges of Balaghat Forest Division (North) and Lanjhi (East & West) and Katangi ranges of Balaghat Forest Division (South) in Madhya Pradesh from 16 – 20th July, 2019. These training programmes have been financed by The Tribal Cooperative Marketing Development Federation of India Limited (TRIFED), a national-level apex organization functioning under Ministry of Tribal Affairs, Govt. of India. The target groups for these trainings were mainly NTFP collectors, SHGs, people of concerned district unions and forest officials. More than 50 Harra fruit collectors/ people of Laghu Vanopaj Samiti along with forest officials including DFO, SDOs and ROs participated in each training programme. Dr. Hari Om Saxena, Scientist-D of T.F.R.I., Jabalpur conducted the trainings and delivered the lectures on sustainable harvesting/ collection, processing, grading and storage of Harra fruits and provided on-site demonstration to the participants. The participants were advised for not to cut the branches of the trees during Bal Harra/ mature Harra fruits collection from the forests. Dr. Saxena explained the trainees about the Minimum Support Prices (MSPs) of NTFPs and concept of “**Apni Dukan and Van Dhan Kendra**” and advised the participants to collect the quality produce so that their produce can fetch better price in the market. He further informed that the MSPs of Harra, Bal Harra and Harra Kacharia as Rs. 10/-, 35/-, and 20/- per kg respectively. The participants can sell their quality produce in Apni Dukan established by the forest department in almost each forest range. The participants and forest officers praised the efforts of organizers to explain the techniques of harvesting, processing, grading and storage of *T. chebula* fruits in a very simple and layman’s language. Forest officers were in the opinion that these techniques will help in maintaining the quality of the Harra fruits and sustainability of the forests as well. Shri D.C. Kori, A.C.T.O. and Shri Pankaj Singh Dhruv, JPF of TFRI provided their all valuable support in conducting the training programmes successfully. The help and support from Dr. Nanita Berry, Scientist-E and Nodal Officer, MFP-MSP trainings is greatly acknowledged.

Glimpses of the training at Aranya Sambaad Sadan, Lamta, Balaghat Forest Division
(North)



Glimpses of the training at Paraswada, Balaghat Forest Division (North)



Glimpses of the training at Baihar, Balaghat Forest Division (North)



Glimpses of the training at Birsa, Balaghat Forest Division (North)



Glimpses of the training at Ukwa, Balaghat Forest Division, (North)



Glimpses of the training at Lanjhi (East & West), Balaghat Forest Division (South)



Glimpses of the training at Tirodi, Kantangi, Balaghat Forest Division (South)





Raj News, Balaghat 21/07/2019



लघु वनोपज संघ का आयोजन

वनोपज हर्य संग्राहकों को दिया गया प्रशिक्षण

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

कटंगी/तिरोड़ी. जंगल में लघु वनोपज गरीब परिवारों की आजीविका का महत्वपूर्ण साधन है। बस समय के साथ फल प्राप्त करने की जरूरत है। जंगल सोने के अंडे देने वाली मुर्गी के समान है। अगर कोई एक बार के फायदे के लिए जंगल या पेड़ को नष्ट कर देगा तो जीवन भर पछताना पड़ेगा।

यह बातें उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के वैज्ञानिक डॉ. हरिओम सक्सेना ने कही। वे प्रशिक्षण कार्यक्रम में संग्राहकों को संबोधित कर रहे थे। शनिवार को तिरोड़ी स्थित विश्राम गृह में ट्राईफेड द्वारा पोषित एमएफपी-एफएसपी योजनान्तर्गत लघु वनोपज संघ द्वारा हर्य प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें उपवनमंडलाधिकारी, वन परिक्षेत्र अधिकारी हिमांशु राय सहित सभी सिकल के परिक्षेत्र सहायक और वन रक्षक सहित बड़ी



संख्या अलग-अलग समितियों के संग्राहक मौजूद रहे।

इस मौके पर हर्य का संवहनीय विदोहन, संग्रहण एवं प्रसंस्करण विषय विशेषज्ञ डॉ. हरिओम सक्सेना ने संग्राहकों को महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। उन्होंने बताया कि अब तक जंगल से संग्राहक किसी भी लघुवनोपज को लाकर सही जानकारी के अभाव में व्यापारियों को बेचता था। जिसका उसे सही परिश्रम मूल्य नहीं मिल पाता था। इसमें जाने-अनजाने संग्राहकों का शोषण होता था। लेकिन बीते 2

सालों से सरकार ने संग्राहकों के लिए योजना शुरू की है जिसके चलते संग्राहक अब अपनी किसी भी लघुवनोपज को अपनी दुकान (लघु वनोपज केन्द्र) में समर्थन मूल्य पर बेच सकते हैं।

ऐसा करने से संग्राहक को वाजिब दाम भी मिलेगा। उन्होंने जंगल की सुरक्षा पर विशेष जोर देते हुए कहा कि संग्राहकों को जंगल से किसी भी लघुवनोपज को संग्रहित करते वक्त जंगल की सुरक्षा का खास ध्यान रखना है। लघुवनोपज हासिल करने के लिए जंगल को

नुकसान नहीं पहुंचाना है। अगर, संग्राहक वर्तमान में अल्प फायदे के लिए जंगल को क्षति पहुंचाएगा तो भविष्य में लाभ नहीं मिल पाएगा। उन्होंने लघु वनोपज की तुड़ाई से लेकर संग्रहण की विस्तार से विधि समझाई। संग्राहकों को अधिक लाभ दिलाने के लिए भविष्य में बंधन केन्द्र भी बनाए जाएंगे। इसके पूर्व उन्होंने सरकार द्वारा लघु वनोपज बेलगुदा, शहद, करंज, पलाश और कुसुम की लाख, नीम के बीज, साल, चार गुल्ली, महुआ गल्ली, बेहड़ा, नागरमोथा, चिरोजी के बीज

के समर्थन मूल्य की विस्तार से जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण के दौरान वन परिक्षेत्र अधिकारी हिमांशु राय ने बताया कि लघु वनोपज खरीदी के लिए तिरोड़ी और महकेपर में लघु वनोपज केन्द्र यानि अपनी दुकानें स्थापित हैं। संग्राहक यहाँ न्यूनतम समर्थन मूल्य पर लघु वनोपज विक्रय कर सकते हैं। संग्राहक भविष्य में बंधन केन्द्र में अपनी लघु वनोपज बेच सकेंगे। उपवनमंडलाधिकारी के हस्ते सभी को इकोफ्रेडली कपड़े के थैलों का वितरण किया गया।

वन परिक्षेत्र लांजी के काष्ठागार में कार्यशाला आयोजित

विषय विशेषज्ञ डॉ. हरिओम सक्सेना ने बताया हरा का महत्व



दिव्य एक्सप्रेस/लांजी। वन परिक्षेत्र लांजी के काष्ठागार डिपो में अतिमहत्वपूर्ण हरा की उपज, क्रियान्वयन, विक्रय आदि पर वैज्ञानिकी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रमुख रूप से विषय विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. हरिओम सक्सेना के द्वारा उपस्थित वन समिति के सदस्यगण, ग्रामीणजनों को हरा की उपयोगिता तथा किस प्रकार हरा को तैयार किया जाता है और कैसे सरकार इसे आपसे खरीदती है इन विषयों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम में प्रमुख रूप एसडीओ जीके वरकडे, परिक्षेत्र अधिकारी जेएन तिवारी, परिक्षेत्र अधिकारी जीएस दुबे सहित पूर्व एवं पश्चिम रेंज के डिप्टी, वनपाल, वनरक्षक आदि उपस्थित रहे।

विषय विशेषज्ञ डॉ. हरिओम सक्सेना बताया हरा का महत्व एवं क्रियाविधि

उपस्थित ग्रामीण जनो को कार्यशाला के अन्तर्गत हरा फल पर विस्तृत रूप से विषय विशेषज्ञ डॉ. हरिओम सक्सेना ने जानकारी देते हुये बताया की हरा टर्मिनलिया चेबुला कम्बेटेरी परिवार का मध्यम से बड़े आकार का एक पर्णपाती वृक्ष है जोकि लगभग 20 से 30 मीटर उंचा एवं 60 सेमी से 1.5 मीटर गोलाई का होता है। हरा को हरड, हलेला, आमागोला, हरार, हरं हरीतकी, चेतकी आदि नामों से भी जाना जाता है। हरा वृक्ष में फूल अप्रैल माई एवं फल माई जून माह में आना प्रारंभ होता है। हरा विशेषतः औषधी के उपयोग में लिया जाता है। हरा फल का गुदा पीसकर औषधीय उपयोग में लाया



जाता है वहीं प्रमुख रूप से हरा के फल से त्रिफला, कज्ज टानिक, मुरब्बा, फल के बाहरी भाग का उपयोग स्याही एवं रंजक बनाने में एवं फल में उपस्थित टैनिन का उपयोग चर्म शोधक में किया जाता है। श्री सक्सेना ने हरा के फल का संवहनीय विदोहन एवं संग्रहण की उचित विधि बताते हुये कहा की वृक्ष की टहनियों को हिलाकर या बांस के हुक की सहायता से या हाथ से भी तोड़ सकते है। फलों की तुड़ाई से पूर्व वृक्ष क्षेत्र के नीचे की जमीन को साफ कर तिरपाल, एग्रोनेट, मच्छरदानी बिछा देनी चाहिये जिससे की फलों को कोई क्षति ना पहुंचे।

फलों को एकत्रित करते समय लगभग 10 प्रतिशत फल पेड़ पर ही पुर्नउत्पादन हेतु छोड़ देना चाहिये। अंत में हरा के प्रकार एवं बाजार का मूल्य भी बताया कि बड़ी हरड हरा 10 रुपये से 35 रुपये प्रति किलोग्राम तक बेची जाती है वहीं बाल हरा हरड 130 रुपये 150 रुपये प्रतिकिलोग्राम बेची जाती है। डॉ. सक्सेना ने कहा कि हम समय-समय पर पुनः उपस्थित होकर हरा के बारे में और

भी अधिक जानकारी देंगे। इसके अतिरिक्त लघुवनोंपत्र में कौन कौन से फलों का उत्पादन किया जा सकता है यह भी जानकारी दी गई।

श्री सक्सेना ने वन समिति के प्रबंधन, वनपाल, वन रक्षको आदि से कहा कि हमें लांजी क्षेत्र से अधिक मात्रा में हरा चाहिये जिसका प्रदेश स्तर पर परिक्षण किया जा रहा है अनेकों स्थानों से हम हरा के फल एकत्रित कर रहे है, जिसमें मण्डला, छिंदवाडा, जबलपुर, बालाघाट जहां का हरा फल सर्वश्रेष्ठ होगा वह विधि के रूप में अन्यत्र स्थानों पर हरा फल लगाया जायेगा उनका संरक्षण एवं संग्रहण किया जावेगा। कार्यक्रम के अंत में एसडीओ जी वरकडे के द्वारा समस्त उपस्थित जनो का आभार व्यक्त करते हुये कहा की निश्चित रूप से डॉ. सक्सेना के द्वारा समझाई गई विधि का प्रयोग कर उत्पादन करें, अपनी वन संपदा का संरक्षण करें ताकि आप लोग इनका लाभ भी प्राप्त कर सकें। कार्यक्रम के अंत में समस्त उपस्थित जनो का भोजन आदि करवाकर कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

वन परिक्षेत्र दक्षिण उकवा

हरा संग्रहण का दिया प्रशिक्षण



उकवा @ पत्रिका. शासन के निर्देशानुसार वन परिक्षेत्र दक्षिण उकवा के कार्यालय में हरा संग्रहण का एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें प्राथमिक लघु वन उपज समिति के प्रबंधकों व नोडल अधिकारियों व संग्राहकों को प्रशिक्षक करने प्रशिक्षक व सहायक प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

इस दौरान प्रशिक्षक टीएफआरआई जबलपुर के वैज्ञानिक डॉ. हरिओम सक्सेना ने उपस्थित संग्राहकों को हरा संग्रहण के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सही तरीके से हरा का संग्रहण करने संग्राहकों को सही दाम मिल पाएगा।

उन्होंने बताया कि बाल हरा का संग्रहण मई व जून में एवं हरा का संग्रहण दिसम्बर माह में किया जाना उत्तम होता है। हरा के पेड़ के नीचे

मच्छरदानी लगाकर हरा संग्रहण करने बताया गया।

इस दौरान वन परिक्षेत्र अधिकारी धमेन्द्र बिसेन ने बताया कि आदिवासी बाहुल्य विकासखंड में वनों पर निर्भर समुदाय को प्रशिक्षित करने वनोपज संग्राहकों को एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने बताया कि हरा संग्राहकों से हरा की खरीदी के लिए केन्द्र सरकार ने इस वर्ष न्यूनतम संग्रहण मूल्य 10 रुपए प्रति किलो 1000 रुपए प्रति क्विंटल घोषित किया है। इस न्यूनतम समर्थन मूल्य पर राज्य सरकार ने हरा खरीदी का कार्य पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों के माध्यम से कराने का निर्णय लिया है। जिससे संग्राहक अब वन विभाग के वन धन केन्द्र व अपनी दुकान में अपनी वनोपज का विक्रय कर सकेंगे।

हरा का संवहनीय विदोहन संग्रहण और प्रसंस्करण का दिया प्रशिक्षण



लांजी (पद्मेश)। दक्षिण वनमण्डल बालाघाट के अंतर्गत परिक्षेत्र पूर्व लांजी सामान्य एवं परिक्षेत्र पश्चिम लांजी सामान्य के लघु वनोपज के संग्रहणकर्ता, प्रबंधक एवं वनकर्मचारियों को हरा (टर्मिनैलिया चेबुला) का संवहनीय विदोहन, संग्रहण एवं प्रसंस्करण का उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के विषय विशेषज्ञ डॉ. हरिओम सक्सेना द्वारा १९ जुलाई को

उपवनमण्डल लांजी के सभाकक्ष में उपवनमण्डलाधिकारी जी के वरकडे, परिक्षेत्र अधिकारी पूर्व लांजी जी एल दुबे, परिक्षेत्र अधिकारी पश्चिम लांजी जे एन तिवारी की प्रमुख उपस्थिती में प्रशिक्षण दिया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यशाला में वैज्ञानिक डॉ. हरिओम सक्सेना द्वारा हरा (टर्मिनैलिया चेबुला) के विषय में विस्तृत जानकारी से अवगत कराया गया। आपने इसके संग्रहण के

उचित समय व फलों का संवहनीय विदोहन एवं संग्रहण की उचित विधि बताई। हरा को हरडु, हलेला, आमगोला, हरं हरीतकी आदि नामों से भी जाना जाता है। हरा के वृक्ष में मई-जून में फल आना प्रारम्भ हो जाते हैं, प्रारंभिक अवस्था में अपरिपक्व जिनमे गुठली विकसित न हुई हो उसे बाल हरा के रूप में औषधीय के रूप में संग्रहित किया जाता है। फल का उपयोग त्रिफला, कब्ज

टॉनिक, मुरब्बा, हल्के बाहरी भाग का उपयोग स्याही एवं रंजक बनाने में एवं फल में उपस्थित टेनिन का उपयोग चर्म शोधक में किया जाता है। हरे से सुनहरे पिले फल को पका हुआ माना जाता है। इसे वृक्षों से प्राप्त करने एवं उसे सुरक्षित रखने के बारे में भी विस्तार से बताया। आपने लघुवनोपज की अपनी देकानों के माध्यम से समर्थन मुल्य पर खरीदे जाने की जानकारी दी।

जमा करते वक्त पूरी निगरानी रखी जा रही थी वह बीच-बीच में फोन पर भी चर्चा कर रहा था. वहीं

परतु निम्न क्वालिटी के केमरे होने की वजह से चोरों की पहचान नहीं हो पाई है।

हरि संग्राहकों को दिया गया हरि संग्रहण का प्रशिक्षण



हरिभूमि न्यूज बालाघाट। आदिवासी बाहुल्य विकासखंड में वनोपज पर निष्पत्त समुदाय को प्रशिक्षित करने प्रशिक्षक और सहायक प्रशिक्षकों ने एक दिवसीय प्रशिक्षण में वनोपज संग्राहकों को हरि संग्रहण की तकनीक से अवगत कराते हुए वनोपज का सही मूल्य मिलाने की जानकारी दी गई। ट्राइफेड द्वारा पोषित एमएफसी एवं एमएएपी योजना के तहत प्रशिक्षण का आयोजन आरप्य संवाद सदन में वनमंडलाधिकारी एस.के. तिवारी,

अधिकारी दीक्षणा उरका के द्वारा पर भरे द्वारा आपका अपना आर्य छात्र छात्राओं को कहा गया की इस रक्षा के लिये कराते प्रशिक्षण दिया शामिल क्षेत्र में भी आप अपना जाता रहेगा।

उपवनमंडलाधिकारी एम.एस. श्रीवास्तव एवं दीक्षणा लामता परिक्षेत्र अधिकारी एवं समस्त परिक्षेत्र सहायक एवं लघु वनोपज संग्राहकों को मौजूदगी में किया गया था। प्रशिक्षण में संग्राहकों को हरि संग्रहण के तरीके बताये गये। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षक हरिओम सक्सेना ने हरि संग्रहण की जानकारी दी। टोएफआरई जबलपुर के वैज्ञानिक डॉ. हरिओम सक्सेना ने औपचार्य गुणों से भरपूर हरि टमीनीलिया चेरुला के संग्रहण के तकनीक को जानकारी वनोपज संग्राहकों को देते हुए बताया कि सही तरीके से हरि को संग्रहण करने पर संग्राहकों को सही दाम मिल सकेगा। गौरतलब हो कि हरि कई आयुर्वेद उत्पाद बनाने वाली कर्पुनियों को भेजा जाता है। वनमंडलाधिकारी एस.के.एस. तिवारी ने बताया कि हरि संग्रहण करने वाले संग्राहकों से उसकी खरीदी के लिए केन्द्र सरकार ने इस वर्ष न्यूनतम संग्रहण मूल्य १० रुपए प्रति किलो अर्थात एक हजार रुपए प्रति क्विंटल घोषित किया है। इस न्यूनतम समर्थन मूल्य पर राज्य सरकार ने हरि खरीदी का कार्या पिल्ले वर्षों की तरह इस बार भी प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों के माध्यम से कराने का निर्णय लिया है। वनोपज संग्राहक अब वन विभाग के वनधन केन्द्र या अपनी टुकान में अपनी वनोपज बेच सकेंगे।

बालाघाट आस्रपास

epaper.divyaexpress.com

हरा संग्रहकों को दिया गया हरा संग्रहण का प्रशिक्षण

दिव्य एक्सप्रेस/बालाघाट। आदिवासी बाहुल्य विकासखंड में वनोपज पर निर्भर समुदाय को प्रशिक्षित करने प्रशिक्षक और सहायक प्रशिक्षकों ने एक दिवसीय प्रशिक्षण में वनोपज संग्रहकों को हरा संग्रहण की तकनीक से अवगत कराते हुए वनोपज का सही मूल्य मिलने की जानकारी दी गई। ट्राइफेड द्वारा पोषित एम्पफर्सी एवं एम्पसपी योजना के तहत प्रशिक्षण का आयोजन आरण्य संवाद संदन में वनमंडलाधिकारी एस.के. तिवारी, उपवन मंडलाधिकारी एम.एस. श्रीवास्तव एवं दक्षिण लामता परिक्षेत्र अधिकारी एवं समस्त परिक्षेत्र सहायक एवं लघु वनोपज संग्रहकों की मौजूदगी में किया गया था। प्रशिक्षण में संग्रहकों को

जबलपुर के वैज्ञानिक डॉ. हरिओम सक्सेना ने औषधीय गुणों से भरपूर हरा टर्मिनलिया चेबुला के संग्रहण के तकनीक की जानकारी वनोपज संग्रहकों को देते हुए बताया कि सही तरीके से हरा संग्रहण करने पर संग्रहकों को सही दाम मिल सकेगा। वनमंडलाधिकारी एस.के.एस. तिवारी ने बताया कि हरा संग्रहण करने वाले संग्रहकों से उनकी खरीदी के लिए केन्द्र सरकार ने इस वर्ष न्यूनतम संग्रहण मूल्य 10 रुपये प्रति किलो अर्थात एक हजार रुपये प्रति छिंटल घोषित किया है। इस न्यूनतम समर्थन मूल्य पर राज्य सरकार ने हरा खरीदी का कार्या पिछले वर्षों की तरह इस बार भी प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों के माध्यम से कानून का

भाजपा किसान मोर्चा जो

हर गांव व किसान तक पहुंचाने चलेगा महाभियान, लगेगी चौपाल

दिव्य एक्सप्रेस बालाघाट। प.दीनदयाल उपाध्याय परिसर जिला भाजपा कार्यालय में किसान मोर्चा की संगठन महापर्व के तहत सदस्यता अभियान को लेकर आवश्यक बैठक जिला अध्यक्ष उमेश देशमुख की अध्यक्षता में आहूत की गई जिसमें मुख्य रूप से से भाजपा जिला अध्यक्ष संदेश शंखरानी, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रेखा बिसेन, जिला सदस्यता प्रभारी महेंद्र सुराना, भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश मंत्री चिंजान लियोन दिव्या प्रभाणी गट्टेरा



प्रभारी हेमंत क्षीरसागर और जिला पंचायत सदस्य रामसिंह नागेश्वर मौजूद रहे। खैरलांजी में आयोजित बैठक के लिए मौसम हरिनखरे, चौधरी, वारासिक्वनी ग्रामीण, विजय राणा, मौसम हरिनखरे, सुदा 24 जुलाई लांजी के भट्टे, किरनापुर रे

मंडलावार बैठकें आयोजित, प्रभासी नियुक्त

सदस्यता महाअभियान को